प्र० / उ० :-

१. 'रस्सी' यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

उ० - 'रस्सी' लोरिका के शरीर के लिए प्रयुक्त हुई है वह कच्ची व नाशवान है।

२. कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

PAGE NO.:
DATE: / /

उ०- कवयित्री के सांसारिक मोह-माया में फँसे होने के कारण उसके ईश्वर प्राप्ति के सारे प्रयास व्यर्थ हो रहे हैं।

प्र० कवयित्री का 'घर जाने की चाह' से क्या तात्पर्य है?

उ०- कवयित्री का घर जाने की चाह से तात्पर्य है, प्रभु से मिलना। कवयित्री इस भवसागर को पार करके प्रभु की शरण में जाना चाहती है।

प्र० (क) जेब टटोली कौड़ी न पाई।

⇒ कवयित्री कहती है कि इस संसार में आकर वह सांसारिकता में उलझकर रह गई और जब अंत समय आया और जेब टटोली तो कुछ भी हासिल न हुआ अब उसे चिंता सता रही है कि भवसागर पार करानेवाले मांझी को उतराई के रूप में क्या देगी।

(ख) खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी

⇒ प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री मनुष्य को ईश्वर प्राप्ति के लिए मध्यम मार्ग अपनाने को

PAGE NO.:
DATE: / /

कह रही है। कवयित्री कहती है कि मनुष्य को भोग विलास में पड़कर कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं है। मनुष्य जब सांसारिक भोगों को पूरी तरह से त्याग देता है, तब उसके मन में अहंकार की भावना पैदा हो जाती है। अतः भोग - त्याग, सुख - दुःख के मध्य का मार्ग अपनाने की बात यहाँ पर कवयित्री कर रही है।

५ प्र० ईश्वर प्राप्ति के लिए बहुत से साधक हठयोग जैसी कठिन साधना भी करते हैं, लेकिन उससे भी लक्ष्य प्राप्ति नहीं होती। यह भाव किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है।

उ०- यह भाव निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त हुआ है :-

आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।
सुषुम - सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!
जेब टटोली, कौड़ी न पाई।
माझी को दूँ, क्या उतराई?

PAGE NO.:
DATE: / /

'ज्ञानी' से कवयित्री का क्या अभिप्राय है?

उ०:- यहाँ कवयित्री ने ज्ञानी से अभिप्राय उस ज्ञान को लिया है जो आत्मा व परमात्मा के सम्बन्ध को जान सके ना कि उस ज्ञान से जो हम शिक्षा द्वारा अर्जित करते हैं। कवयित्री के अनुसार भगवान कण-कण में व्याप्त है पर हम उसको धर्मों में विभाजित कर मंदिरों व मस्जिदों में ढूँढते हैं। जो अपने अन्तःकरण में बसे ईश्वर के स्वरूप को जान सके वही ज्ञानी कहलाता है और वहीं उस परमात्मा को प्राप्त करता है। तात्पर्य यह है कि ईश्वर को अपने ही हृदय में ढूँढना चाहिए और जो उसे ढूँढ लेते हैं वही सच्चे ज्ञानी हैं।